ISSN:2583-8849



मीनाक्षी पारीक
जयपुर, राजस्थान

प्यार के सपने बुनें

कुछ कहें हम और कुछ तुमसे सुनें।
आओ दो पल प्यार के सपने बुनें॥

वो गली वो आम की अमराइयाँ,
छाँव ठंडी भाव की गहराइयाँ।
याद है मौसम सभी वो गुनगुने,
आओ दो पल प्यार के सपने बुनें।

थी मदिर वह चाँदनी की रात भी,
तन थे महके और महकी बात भी।
ख्वाब फिर रंगीन आँखों में चुनें,
आओ दो पल प्यार के सपने बुनें।

ज़िन्दगी है साँस का मधुरिम सृजन,
पल दो पल के भाव का अनुपम मिलन।
जगत के हैं लोग सारे अनमने ,
आओ दो पल प्यार के सपने बुनें।

उसने ही ठोकर खाई है

आँखों में आँसू भर आए, दिल ने फिर रोक लगाई है।
तज कर जो कोई लीक चला, उसने ही ठोकर खाई है॥

जो आज सफलता दिखती है,
बस चूर उसी में रहते हैं।
कीमत का तो अब पता नहीं,
पाषाण सदा ही सहते हैं।
अरमानों की जलती ज्वाला, अब तलक न बुझने पाई है।
तज कर जो कोई लीक चला, उसने ही ठोकर खाई है ॥

इक महल बना था आशा का,
वो ढह गया घोर निराशा में।
भावों से भरी हुई गागर,
बह गई नयन के सागर में।
कोयल की कूक हुई फीकी, अब बाग में न अमराई है।
तज कर जो कोई लीक चला, उसने ही ठोकर खाई है ॥

दुनिया भी अजब रँगीली है
बहलाती है फुसलाती है ।
पग -पग पर धोखा है इसमें,
सोचो तो बस सपनीली है।
गर ईश कृपा हो जाए तो, भवसागर से उतराई है।
तजकर जो कोई लीक चला, उसने ही ठोकर खाई है ॥